अंधेरे के पार

सुभाष राय

अंधेरे के पार

(महत्वपूर्ण कवियों, कथाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित)

सुभाष राय

भूमिका

लिखने की सार्थकता

कविता लिखना कठिन है लेकिन गद्य लिखना भी बहुत आसान नहीं। अच्छा गद्य लिखना तो बहुत ही मुश्किल है। वह भी उसी तरह संभव होता है जैसे कविता। लिखने की अपनी दिक्कतें हैं। लिखना हमेशा नहीं हो सकता। कोई नियम बनाकर भी नहीं हो सकता। कई बार घंटों कीबोर्ड पर बैठने के बावजूद कुछ नहीं बनता और कई बार अनियोजित ढंग से कुछ बहुत अच्छा बन जाता है। समाज में, देश में और दुनिया में जो कुछ घटता रहता है, उसमें से कुछ घटनाएं मन पर ऐसा दबाव बनाती हैं कि लिखे बिना रहा नहीं जाता लेकिन इस तरह की हर परिस्थिति में लिख पाना संभव हो ही जाए, यह जरूरी नहीं। कभी- कभी ऐसी विचित्र मन:स्थिति बनती है कि लिखने का बहुत दबाव होता है पर चाहकर भी लिखा नहीं जाता। कई बार उसी सवाल पर किसी और का लिखा हुआ पढ़ते हुए तनाव खत्म हो जाता है, लिखने का दबाव कम हो जाता है। कई बार कुछ जगहें, कुछ चीजें, कुछ व्यक्तित्व बहुत आकर्षित करते हैं। कोई कलाकार, कोई कवि, कोई कथाकार चेतना में गहरे धंस जाता है। उसे बार- बार पढ़ने- सुनने का मन होता है, वह बार-बार याद आता है, अपनी कला के साथ, कविता के साथ, कहानी के साथ या अपनी किसी भी रचना के साथ। और लिखवा लेता है अपने बारे में। यह संभव नहीं है कि आप किसी भी

व्यक्ति के बारे में या हर किसी के बारे में लिख डालें। यह भी असंभव होता है कि हर आग्रह, हर फरमाइश पर आप लिख डालें। उनके बारे में लिखना अच्छा लगता है जो मन को, हृदय को छू लेते हैं, जो मानवता के, मनुष्य के पक्ष में खड़े रहते हैं, जो तमाम कठिनाइयों के बाद भी विचलित नहीं होते, झुकते नहीं, जो पीड़ा के साथ अडिग तने हुए खड़े रहते हैं।

यह दुनिया दो खेमों में बंटी नजर आती है। एक वैभव, सम्पन्नता से लदी-फदी। धर्म और सत्ता के साथ गठजोड़ करके आततायी की तरह व्यवहार करती। गरीबों और वंचितों के शोषण की नींव पर खड़ी और दूसरी सीधे-सच्चे गरीब, किसान, मजदूर, आदिवासी की, स्त्री की, छली गयी दुनिया। जिन्हें सदियों से छला गया है, वे धीरे-धीरे वंचकों के आपराधिक गठजोड़ की सच्चाई समझ चुके हैं और अपने अधिकार हासिल करने के लिए उठ खड़े हुए हैं। वे लड़ रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि यह लड़ाई कब तक चलने वाली है लेकिन उन्हें यह पता है कि लड़ाई जारी रखनी होगी। उन्हें यह भी पता है कि संघर्ष जारी रखने का माद्दा ही एक दिन उन्हें उनके हक दिलायेगा। जो सचमुच भीतर की मांग पर लिखते हैं, वे इस लड़ाई के पक्ष में लिखते हैं, इसे जारी रखने वालों के पक्ष में लिखते हैं। वे उन सारी ताकतों के खिलाफ, उनकी साजिशों के खिलाफ लिखते हैं, जो ताकत के बल पर यह शोषण जारी रखे हुए हैं। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए लड़े।

जब भी मुझे ऐसा कोई व्यक्तित्व प्रभावित करता है, मैं उसके बारे में लिखना चाहता हूँ, लिखने की कोशिश करता हूँ। नहीं कह सकता कि हर बार कामयाब हो जाता हूँ लेकिन कोई- कोई कोशिश सफल हो जाती है। दुनिया में ऐसे अनगिनत योद्धा हैं। सबके बारे में लिख पाना किसी भी एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। जरूरत भी नहीं है क्योंकि बहुत सारे लोग समय की गति को, उसके युद्ध को, उसके सिपाहियों को लगातार दर्ज कर रहे हैं। जो लड़ रहे हैं, जो लड़ने वालों के साथ खड़े हैं, उनमें भी बहुत ऐसे लोग हैं, जिनके पास ताकतवर भाषा है, कला है और वे स्वयं भी समय को लगातार दर्ज कर रहे हैं। कविता में, कहानी में, नाटक में, गद्य की अनेक विधाओं में, कला के अनेक माध्यमों में, मीडिया में। मेरा लिखने का उद्देश्य पाठकों की स्मृति को जगाने भर का है ताकि वे आज के नायकों को पहचान सकें, उनकी भाषा, उनके रंग, उनके चित्र समझ सकें। मैं लिखता हूँ बस इतने भर के लिए कि लड़ाई जारी रखी जा सके। लिखने की कोई पूर्व शर्त नहीं होती। लिखने से सब कुछ बदल जायेगा, इस आस्था के प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता लेकिन यह बिलकुल सच है कि लिखना कभी भी तूफान मचा सकता है। यह सोचकर भी नहीं लिखा जा सकता कि वह तूफान मचा ही देगा। लिखना तो लिखना भर होता है। एक शबद सन्यासी का काम। बस लिखना है, लिखने से कुछ हासिल होगा, यह आकांक्षा नहीं पालनी है। जिस तरह सैकड़ों साल पहले का लिखा आज के अत्याचारियों के लिए असुविधाजनक हो सकता है, उसी तरह

आज का लिखा आज के समय का वातचक्र तो बन ही सकता है, सौ साल बाद के समय में भी आलोड़न मचा सकता है।

जो लोग अखबारों में काम करते हैं, उन्हें रोज ही लिखना होता है। उन्हें रोज लिखने का पैसा मिलता है। वे लिखना बंद कर दें तो उनकी नौकरी का अध्याय भी बंद हो सकता है। ऐसी कठिन परिस्थिति में कुछ भी लिखने की जगह जो लोग कुछ सार्थक लिखने की कोशिश करते हैं, उन्हें जल्दी ही पहचान मिल जाती है। मीडिया बहुत ताकतवर माध्यम है और इसके सकारात्मक उपयोग से छोटी-छोटी चीजें बदली जा सकती हैं, लोगों की दिक्कतें आसान की जा सकती हैं । कई बार हलचल भी मचायी जा सकती है। लेकिन सत्ता ने तमाम प्रलोभन और प्रेशर के जरिये मीडिया को सुविधाभोगी, आलसी, कमजोर और भ्रष्ट बनाया है। वहां सच्चाई के पक्ष में खड़े होने और लड़ने का बहुत स्पेस नहीं है। जो बहुत हिम्मत करते हैं और सत्ता, पूंजी एवं पद-सम्मान से निरपेक्ष रहकर अपना युद्ध जारी रखना चाहते हैं, उन्हें देर-सवेर या तो चुप करा दिया जाता है या किसी छल भरी साजिश में फंसाकर सीकचों के पीछे डाल दिया जाता है। इस माध्यम की अपनी चुनौतियां हैं, खतरे भी हैं, लेकिन इसके सही इस्तेमाल से चीजें बदल भी सकती हैं। मैं एक साथ मीडिया की ताकत के सकारात्मक उपयोग की भी कोशिश करता हूँ और साहित्य, कला जैसे स्थायी महत्व के उपकरणों को भी रचने का जरिया बनाता हूँ। इसी क्रम में रचनात्मक लेखन के साथ ही समय-समय पर कुंभनदास और कबीर

की दुनिया के कुछ रहवासियों को भी पढ़ने, समझने, जानने का अवसर मिलता रहता है। कभी- कभी उन पर या उनकी रचनाओं पर बात करने का मन करता है, कभी ऐसा करने के कुछ आग्रह भी आते हैं, जो अस्वीकार नहीं किये जाते। इसी तरह बनते रहते हैं चमकते हुए, बोलते- बतियाते हुए, अन्याय के खिलाफ आवाज देते हुए कुछ खास टुकड़े। ऐसे ही कुछ टुकड़े इस पुस्तक में संकलित हैं। अगर किसी को भी इस पुस्तक से थोड़ी भी रोशनी मिली, किसी के जीवन का थोड़ा भी अंधेरा छंटा तो मेरा लिखना सार्थक होगा। शुभमस्तु।

सुभाष राय

डी-1/109,

विराज खंड,

गोमतीनगर,

लखनऊ-226010

संपर्क-9455081894

अनुक्रम

एक जिद्दी आशा	9
ठहरा हुआ समय	27
लड़ेगा तो बचेगा	43
काशी का महान औघड़	55
बांसुरी और कविता	72
हौसला है अनंत	86
एक पेड़ चांदनी	98
दुख ही अपना साथी	116
बूंदों की आवाज	129
कारवाँ बनता गया	147
विद्रोह के बीज	160
आज का कबीर	172
आततायी के विरुद्ध	182
अँधेरे में एक रोशनदान	197

जिसने साहस दिया 208

प्रेम और यातना 218

चेत मछंदर 225

जो घर फूकें आपना 239

न मोमिन न काफिर 253

मरै सो जीवै 267